पिछले पंद्रह दिनों में धूल भरी आँधी व कहीं–कहीं बारिश भी हुई है जिससे कपास की फसल पर विपरीत प्रभाव भी हुए हैं। अब कपास की बिजाई न करें। यदि पलेवा कर लिया है, तो एक से दो दिनों के भीतर नरमा की बिजाई कर लें। अतः किसान भाई वैज्ञानिकों के द्वारा बताई गई सलाह के अनुसार ही कृषि क्रियाएँ करें। अगले पंद्रह दिनों के लिए कपास में की जाने वाली कृषि क्रियाएँ बताई गई हैं।

- धूल भरी आंधी के बाद जहां नरमा के पत्ते मुरझाए या जले हुए लग रहे हो वहां किसान भाई ड्रिप या फवारा विधि से पानी लगाएं।

उर्वरक

- किसान भाई मिट्टी की जांच अवश्य करवाएं, मिट्टी की जांच के आधार पर ही पोषक तत्व की मात्रा तय की जानी चाहिए। बी टी कपास की बिजाई के समय एक एकड़ में एक बैग यूरिया, एक बैग डी.ए.पी, 30 से 40 किलो ग्राम पोटाश व 10 किलो ग्राम जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत खेत की तैयारी के समय अवश्य डालें।
- जहाँ नरमा एक महीने से ज़्यादा हो गया है वहाँ बारिश के बाद या पानी लगाने के बाद आधा बैग यूरिया हलाई के साथ डाल दें।

बी टी कपास की उन्नत किस्में

- किसान भाई बी टी कपास का विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किया हुआ बीज ही लें (सूचि सलंग्न)। इसकी जानकारी के लिए आप जिले के कृषि विभाग या कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। बी टी कपास का बीज प्रमाणित संस्था या अधिकृत विक्रेता से ही लें तथा इसका पक्का बिल अवश्य लें।

बीज की मात्रा

- बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई करें। कतार से कतार व पौधे से पौधे की दूरी 100 x 45 सेंटीमीटर या 67.5 x 60 सेंटीमीटर रखें।

कीट प्रबंधन

- किसान भाई अपने खेत में या आसपास रखी गई पिछले साल की नरमा की लकड़ियों के टिन्डे एवं पत्तों को झटका कर अलग कर दें एवं इक्कठा हुए कचरे को नष्ट कर दें। इन लकड़ियों के टिन्डो में गुलाबी सुंडी निवास करती है अतः यह कार्य बौकी (Square) आने से पहले कर लें।
- जिन किसान भाइयों ने अपने खेतों में बी टी नरमा की लकड़ियों को भंडारित करके रखा है या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि इन किसानों के खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप अधिक होता है।
- गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड लगाए एवं तीन रातों में यदि 12 से 15 पतंगे आते है तथा फसल में फूल आने लगे तो स्प्रै की जरुरत है ।

- कपास की शुरुआती अवस्था में ज्यादा जहरीले कीटनाशको का प्रयोग ना करें। ऐसा करने से मित्र कीटों की संख्या भी कम हो जाती है।
- विश्वविद्यालय द्वारा कपास की खेती के लिए हर 15 दिन में वैज्ञानिक सलाह जारी की जाती है अतः उसके अनुसार ही सस्य क्रियांए एवं कीटनाशकों का प्रयोग करें।

रोग प्रबंधन

- जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधों के आसपास के स्वस्थ पौधों में कार्बेंडाजिम 50WP (2 ग्राम प्रति लीटर का घोल) बनाकर 400 से 500 मिलीलीटर जड़ों में डालें।
- बीमारी से सूखे हुए पौधों को उखाड़ दे ताकि बीमारी को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- फसल की लगातार निगरानी रखनी चाहिए व् पती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9992911570 9466812467 8901047834

कपास अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

अनुसंधान निदेशालय,चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

ट्रैक्टर से जुताई किया हुआ खेत।

फसल की प्रारंभिक अवस्था में थ्रीप्स के प्रकोप से पत्तियों का टेढ़ा मेढ़ा हों जाना । इस अवस्था में कोई कीटनाशक का प्रयोग न करें। ऐसे पौधेँ अपने आप रिकवर कर जातें हैं।

गुलाबी सुंडी का फेरोमोन ट्रैप

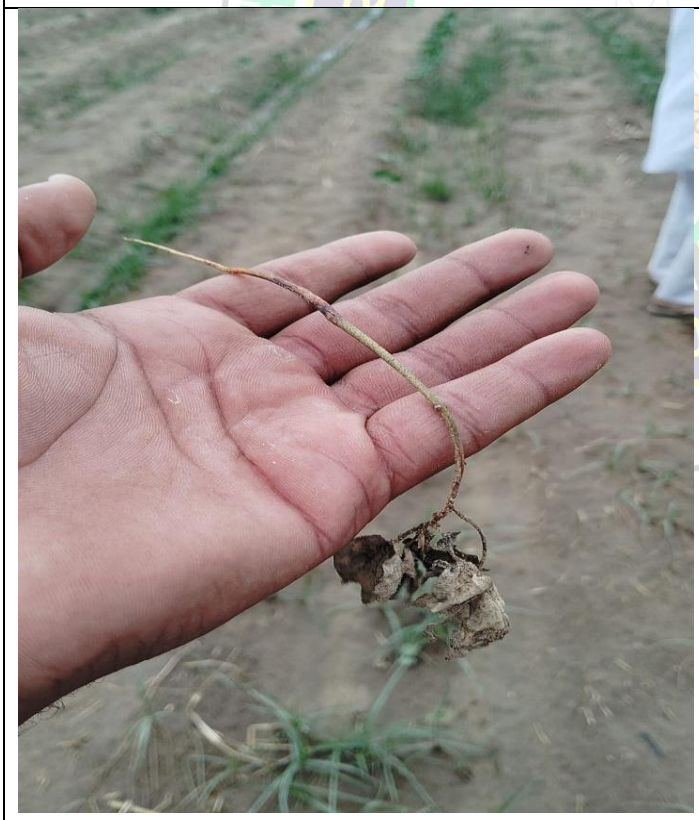

जड़ गलन रोग के लक्षण। इस अवस्था में कार्बेंडाजिम 50WP 2 ग्राम प्रति लीटर का घोल बनाकर जड़ों में डालें।

उखेड़ा रोग के लक्षण। इस अवस्था में कार्बेंडाजिम 50WP 2 ग्राम प्रति लीटर का घोल बनाकर जड़ों में डालें।